Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H.D. Jain College, Ara.

Notes For - B.A. part - III, paper - 5

Topic - बलबन की समस्याएँ :- सुल्तान बनने पर बलबन के समक्ष प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित थी —

(1) सुल्तान के पद और राजमुकुट की स्थिति प्रतिष्ठा
(2) आन्तरिक शांति एवं मजबूतीकरण की आवश्यकता
(3) बंगाल का विद्रोह एवं दमन
(4) हिन्दूओं के विद्रोहों का दमन
(5) मंगोल आक्रमण की समस्या।

सुल्तान बनने के समय बलबन के समक्ष अनेक कठिनाईयां थी। उनपर विजय प्राप्त किए बिना उसकी स्थिति सुदृढ़ नहीं हो सकती थी। इल्तुतमीश के पश्चात् राजनीतिक षड्यंत्रों, अधिकारियों की मनमानी एवं निहित स्वार्थों तथा अयोग्य शासकों के शासन के दौरान संपूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो चुकी थी। चारों तरफ अव्यवस्था और अराजकता व्याप्त थी।

इतिहासकार बरनी के अनुसार - दिल्ली के आसपास मेवातियों का आतंक छाया हुआ था। वे मेवाती दिन-रात, दिन दहाड़े लोगों को लूट लेते थे। राज की आर्थिक स्थिति भी दयनीय थी। लगातार युद्धों, षड्यंत्रों और प्रशासनिक ढिलाई के कारण खजाना लगभग रिक्त पड़ा हुआ था। राजदरबार षड्यंत्रों एवं गुटबाजी का अड्डा था। 'चालीसा' की शक्ति अत्यंत ही बढ़ गई थी। विभिन्न सरदार और अमीर अपना - अपना प्रभाव बढ़ाने में लगे हुए थे। फलतः सुल्तान की शक्ति लगभग नष्ट हो चुकी थी। वह नाममात्र (नाममात्र) का शासक था। सुल्तान तुर्क अमीरों के हाथ की कठपुतली बन चुका था।

→

→ उलेमा वर्ग (धार्मिक वर्ग) भी राजनीति में दखल दे रहा था। राज्य की आंतरिक अव्यवस्था का लाभ उठाकर राजपूत शासक पुनः तुर्कों को भारत से बाहर खदेड़ने एवं अपनी राजनीतिक सर्वोच्चता स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे।

उत्तर-पश्चिमी सीमा भी आरक्षित थी। सिंध एवं पंजाब पर अपना प्रभाव स्थापित कर मंगोल अब दिल्ली विजय का स्वप्न देख रहे थे। कुल मिलाकर बलबन जैसे शक्तिशाली व्यक्ति के लिए भी स्थिति भयावह थी, परंतु बलबन ने दृढ़तापूर्वक इस स्थिति का सामना किया। उसने सुल्तान की प्रतिष्ठा पुनः स्थापित की, "चालीसा" का प्रभाव समाप्त किया। आंतरिक विद्रोहों को दबाया एवं मंगोलों से राज्य की सुरक्षा की व्यवस्था की तथा प्रशासन का पुनर्गठन किया। बलबन के इन कार्यों से सल्तनत की स्थिति पहले की अपेक्षा अधिक सुदृढ़ हुई।